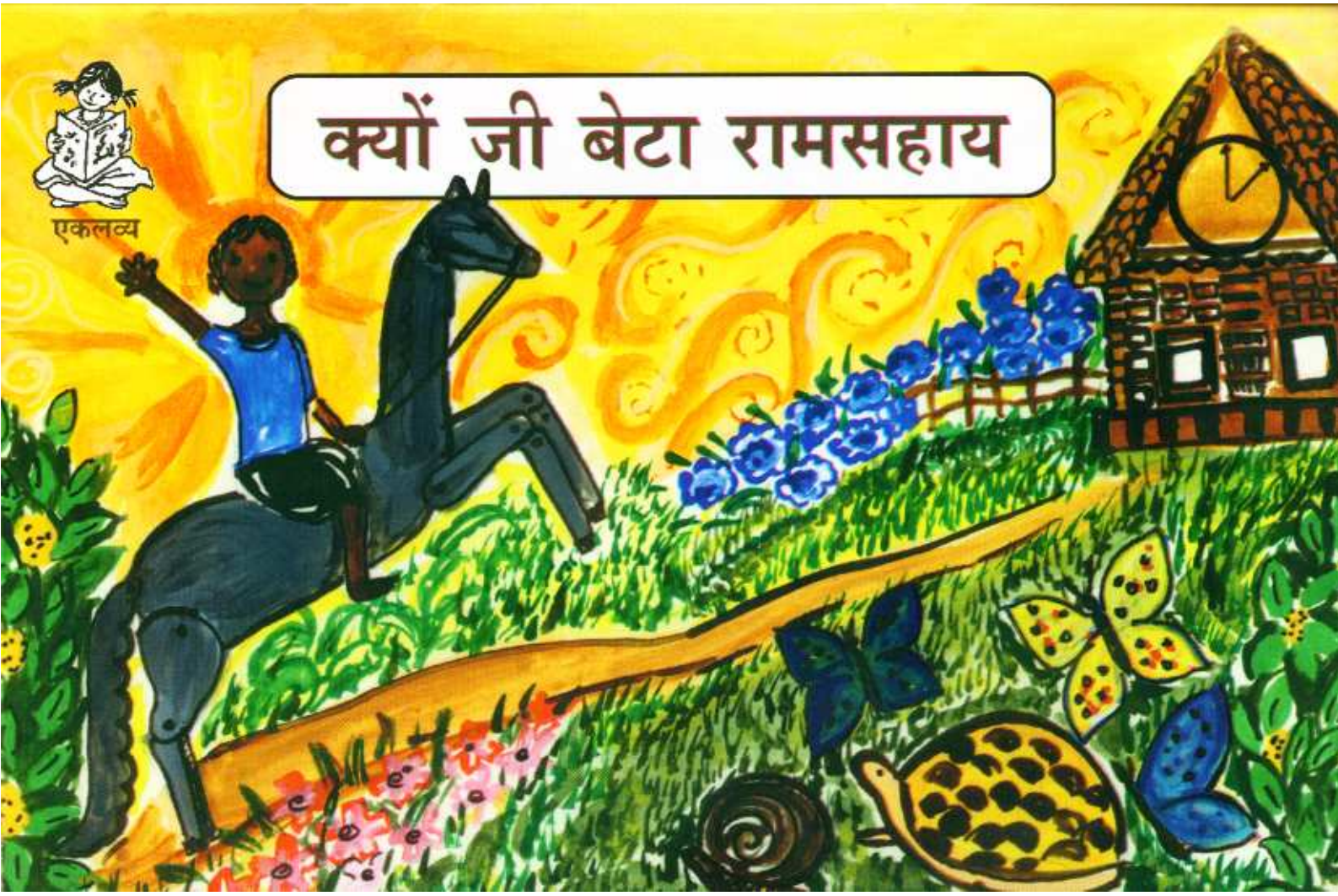

क्यों जी बेटा रामसहाय

एकलव्य

क्यों जी बेटा राम सहाय

Kyon Ji Beta Ram Sahay

बच्चों के खेल-गीत

संकलनः तेजी ग्रोवर

चित्रांकनः रानू टाइटस

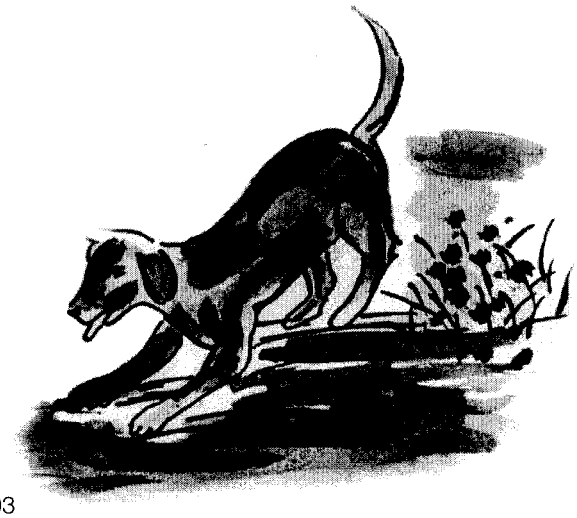

पहला संस्करणः दिसम्बर 2006 / 3000 प्रतियाँ

80 gsm मेपलिथो और 135 gsm आर्ट पेपर (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-86-3

मूल्यः 18.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी

भोपाल 462 016 (म.प्र.)

फोन - (0755) 246 3380, फैक्स - (0755) 246 1703

www.eklavya.in

सम्पादकीयः books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल, फोन (0755) 255 5442

इस किताब के बारे में

क्यों जी बेटा राम सहाय कविता बच्चों में बेहद लोकप्रिय है। आप गौर करेंगे कि उलाहने का इतना बढ़िया प्रयोग बच्चों की कविता में देखने को कम ही मिलता है। मज़े की बात तो यह है कि इस उलाहने में देर से आने वाले के लिए एक अत्यन्त आत्मीय और लाड़भरा भाव भी है।

ऐसा लगता है कि जीवन के कुछ कठिन पहलुओं से जुड़ी हुई विनोदपूर्ण कविता हम सब पर कुछ अलग ही असर डालती होगी। ऐसी कविताओं से छिड़ी चर्चा आपको बच्चों के अन्तर्जगत में बहुत दूर तक ले जा सकती है। निरंकारदेव सेवक जी की एक कविता इस संग्रह में है जिसमें मुर्गी बच्चों को तो राई के दाने खाने को देती है, और मुर्गे को दूध-मलाई के लड्डू! इस कविता के साथ दिए गए चित्र में चूज़े मुण्डी उठाकर अचकचाए से देख रहे हैं। यह कविता अधिकांश बच्चों को बहुत पसन्द आती है। आप चाहें तो इस कविता और इस संग्रह की अन्य कविताओं के कई सम्भावित अर्थों के बारे में कक्षा में खूब अच्छी बातचीत भी चला सकते हैं।

इस संग्रह की कविताओं से एक चीज़ साफ-स्पष्ट नज़र आती है – कि इन कवियों ने बच्चों की कविताएँ बच्चों की दुनिया में खूब रच-बस जाने की प्रक्रिया में ही लिखी हैं। रानू टाइटस ने भी चित्रों को इसी तरह बनाया है कि बच्चे उनका कविता के साथ आनन्द लें और अलग से भी।

- तेजी ग्रोवर

घूमा लट्टू
नाचा लट्टू
बैठे रह गए
सभी निखट्टू।

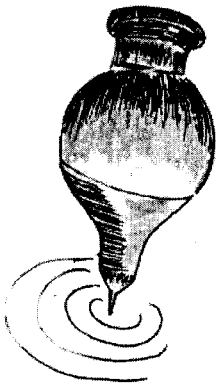

इमली की डार पे
बैठी थी मैना।
कर रही थी कंघी,
देख रही थी ऐना।

क्यों जी बेटा राम सहाय
इतनी जल्दी कैसे आए
अभी तो दिन के दो ही बजे हैं
कहो आजकल बड़े मज़े हैं?

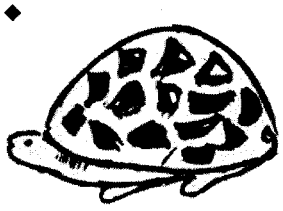

चिड़िया कहती – टी-टुट-टुट
मुझको भी दे दो बिस्कुट।
भूखी हूँ मैं खाऊँगी
खा-पीकर उड़ जाऊँगी।

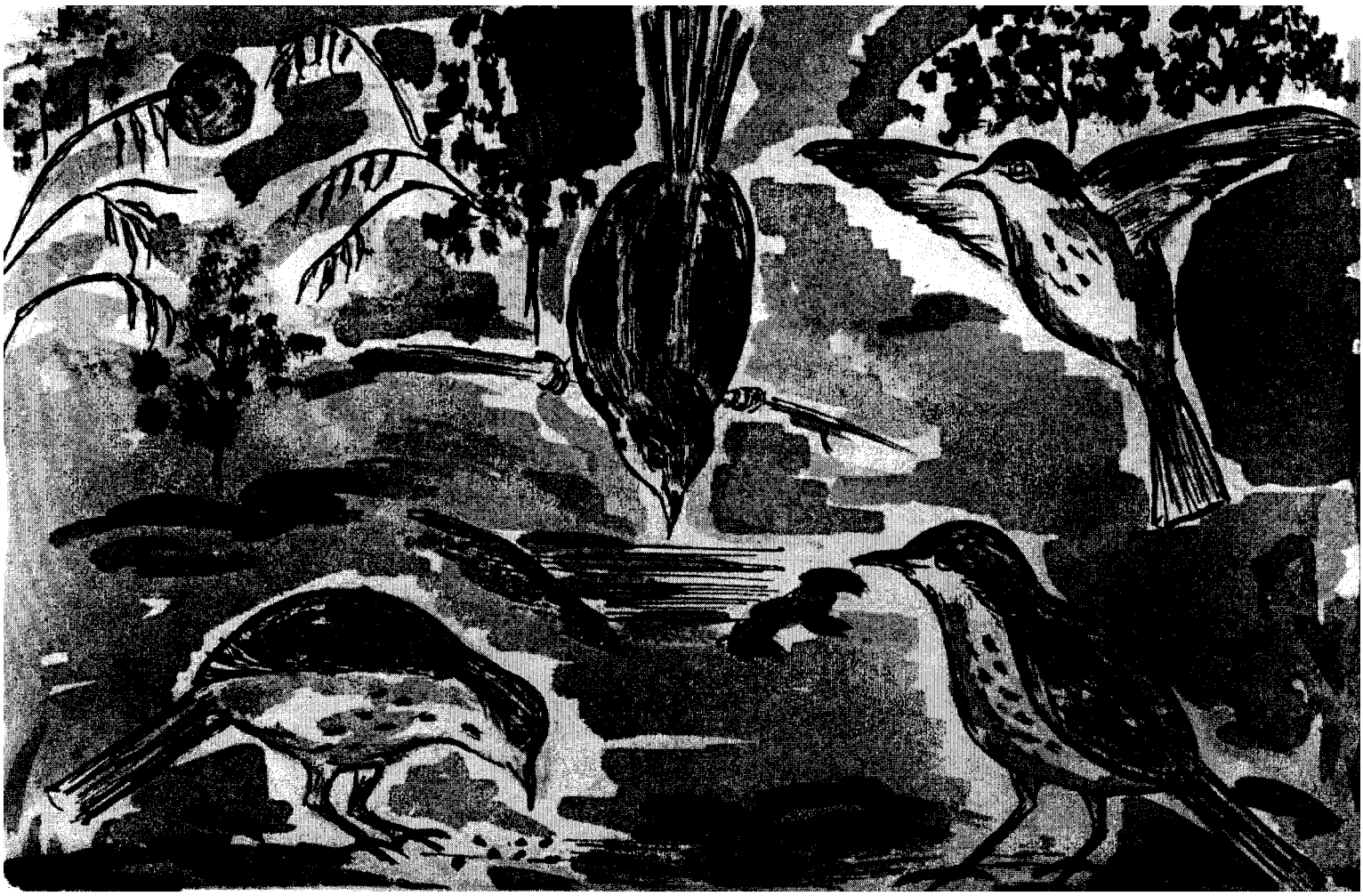

चिड़िया चिड़िया पानी पी,
चिड़िया चिड़िया दाना खा।
चिड़िया चिड़िया बैठ यहाँ,
चिड़िया अपने पंख दिखा।

एक जामुन दे दो भैया
मैं नीली जीभ दिखाकर
ले लूँगा एक रुपैया।

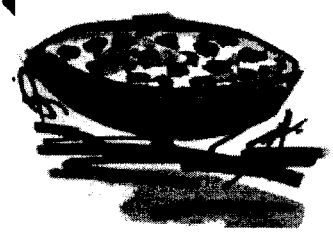

मुर्गी खाए मटर के दाने
बच्चों को दे राई के,
मुर्गे को थाली में रखकर
लड्डू दूध-मलाई के।

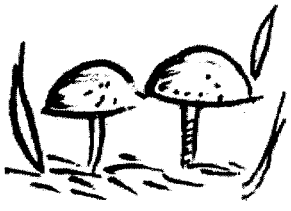

इल्ली उल्ला
खा के रसगुल्ला
हमने किया कुल्ला
पानी में उठा बुल्ला
देख रहे मुल्ला
इल्ली उल्ला

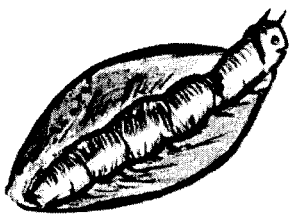

बछड़ा बोला गाय से –
दूध नहीं पीना है मुझको
काम चलेगा चाय से।

रोटी अगर पेड़ पर लगती
तोड़-तोड़कर खाते,
तो पापा क्यों गेहूँ लाते
और उन्हें पिसवाते ?

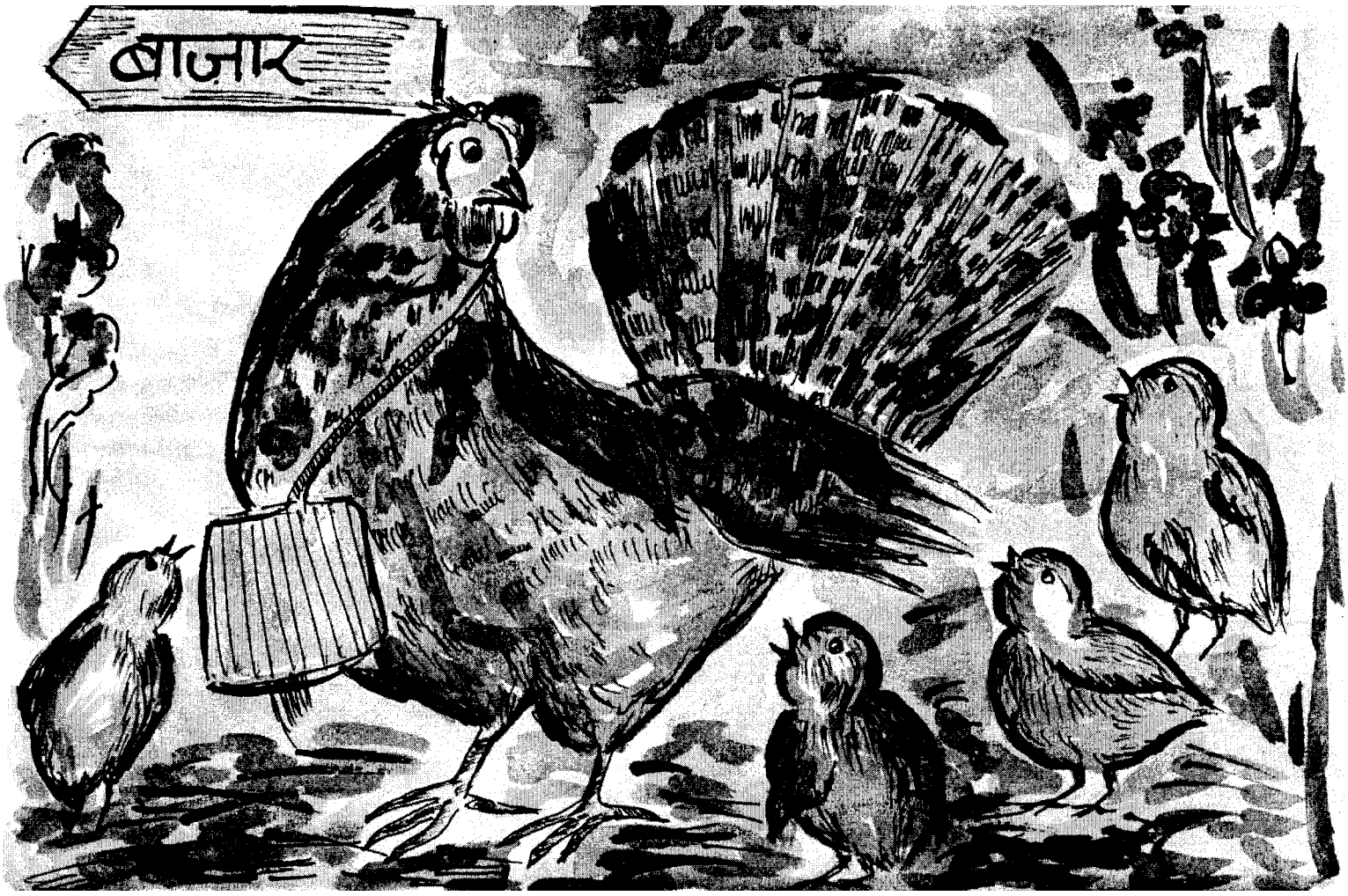

मुर्गी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
बच्चे बोले चें-चें-चें
अम्मा हम भी साथ चलें।

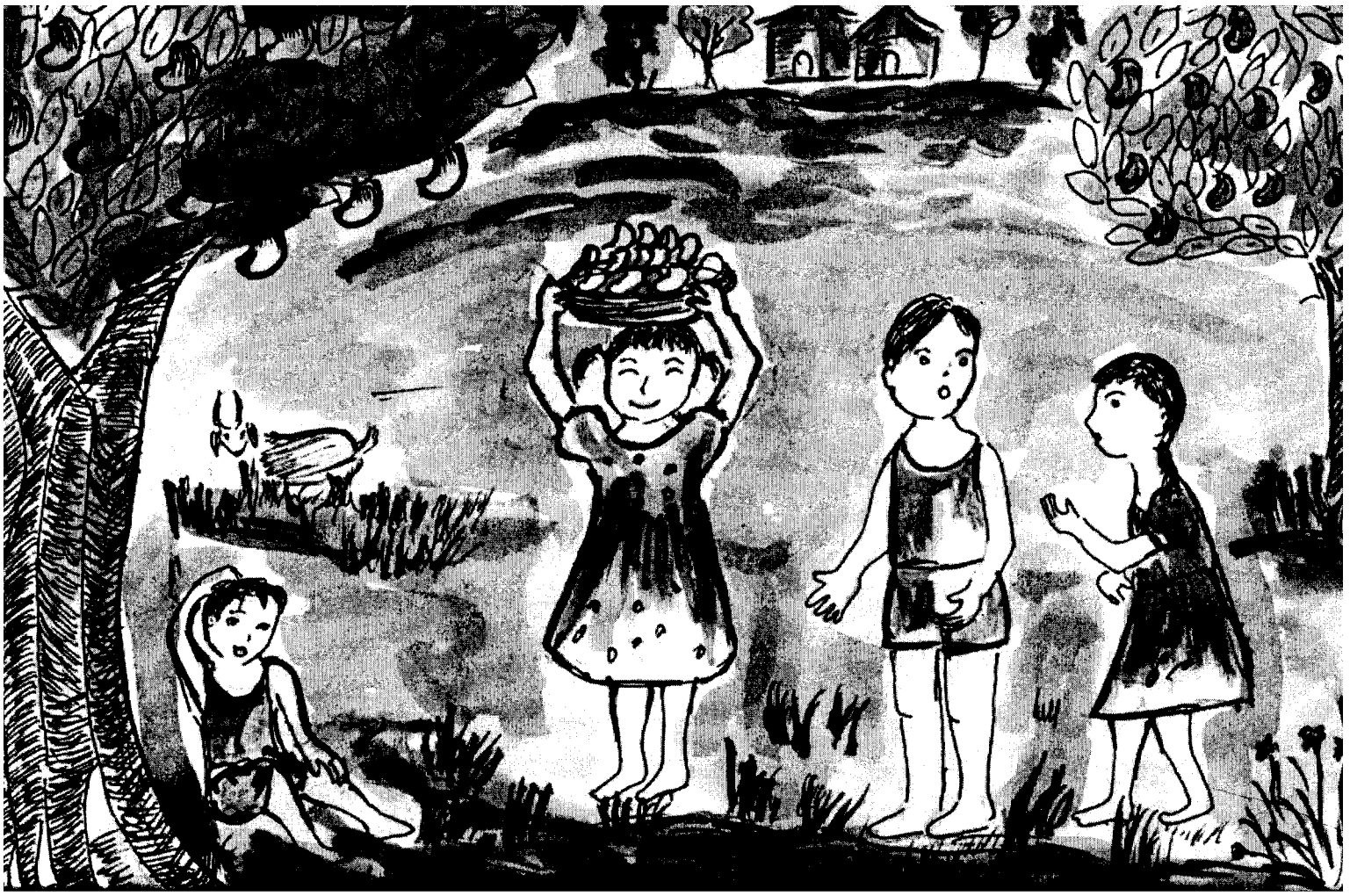

छह साल की छोकरी
भरकर लाई टोकरी
टोकरी में आम हैं
नहीं बताती दाम है।

मेरा कुत्ता देखा तुमने
आस-पास या यहीं कहीं ?
क्या वो हाँ-हाँ भौंक रहा था
या भौंक रहा था नहीं-नहीं ?

नदिया के नीले पानी में
पाँव डालकर देखो तो
आकर छोटी-छोटी लहरें
करें गुदगुदी देखो तो।

जल मुर्गी जब धान खेत में
चीखी होगी कुकड़ूँ कू
गाया होगा कोयल ने भी
जंगल में तब कू कू कू

इस किताब में संकलित कविताओं के रचनाकार इस प्रकार हैं -

घूमा लट्टू
नाचा लट्टू
बैठे रह गए
सभी निखट्टू।

रमेश थानवी

चिड़िया चिड़िया पानी पी,
चिड़िया चिड़िया दाना खा।
चिड़िया चिड़िया बैठ यहाँ,
चिड़िया अपने पंख दिखा।

प्रयाग शुक्ल

मुर्गी खाए मटर के दाने
बच्चों को दे राई के,
मुर्गे को थाली में रखकर
लड्डू दूध-मलाई के।

निरंकारदेव सेवक

चिड़िया कहती – टी-टुट-टुट
मुझको भी दे दो बिस्कुट।
भूखी हूँ मैं खाऊँगी
खा-पीकर उड़ जाऊँगी।

निरंकारदेव सेवक

एक जामुन दे दो भैया
मैं नीली जीभ दिखाकर
ले लूँगा एक रुपैया।

तेजी ग्रोवर

इल्ली उल्ला
खा के रसगुल्ला
हमने किया कुल्ला
पानी में उठा बुल्ला
देख रहे मुल्ला
इल्ली उल्ला

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

बछड़ा बोला गाय से –
दूध नहीं पीना है मुझको
काम चलेगा चाय से।

सूर्यकुमार पाण्डेय

छह साल की छोकरी
भरकर लाई टोकरी
टोकरी में आम हैं
नहीं बताती दाम है।

रामकृष्ण शर्मा 'खद्दरजी'

नदिया के नीले पानी में
पाँव डालकर देखो तो
आकर छोटी-छोटी लहरें
करें गुदगुदी देखो तो।

पार्क ज्योंग जांग
अनुः दिविक रमेश

रोटी अगर पेड़ पर लगती
तोड़-तोड़कर खाते,
तो पापा क्यों गेहूँ लाते
और उन्हें पिसवाते?

निरंकारदेव सेवक

मेरा कुत्ता देखा तुमने
आस-पास या यहीं कहीं?
क्या वो हाँ-हाँ भौंक रहा था
या भौंक रहा था नहीं-नहीं?

तेजी ग्रोवर

जल मुर्गी जब धान खेत में
चीखी होगी कुकडूँ कू
गाया होगा कोयल ने भी
जंगल में तब कू कू कू

छोए सुन ए
अनुः दिविक रमेश

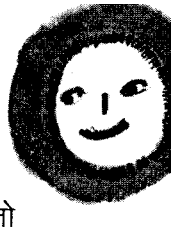

बच्चों के लिए कविताएँ

बच्चों के लिए कविता की कई पुस्तकें हम एक-साथ आपके सामने लाने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसी पुस्तकें जो "साहित्य" हैं और भाषा के साथ अद्‌भुत खेल खेलती हैं। भाषा सीखने की प्रक्रिया में पढ़ने लायक इस तरह की सामग्री जो हमारी समझ में बच्चों में पढ़ने और लिखने की इच्छा पैदा करती है। पहली तीन किताबें हैं – **अक्कड़-बक्कड़, दूध-जलेबी जग्गग्गा, क्यों जी बेटा राम सहाय** – यानी दो, तीन, चार पंक्तियों की कविताओं के संग्रह। और फिर ज़रा बड़ी कविताओं के दो संकलन – **बैठ घोड़ा पानी पी** और **हाऊ हाऊ हप्प**। छठी किताब है **आपके जापानी हाइकू** – तीन-तीन पंक्तियों वाली सुप्रसिद्ध पारम्परिक जापानी कविताएँ जो उन सभी पाठकों के लिए हैं जो कविता पढ़ने और लिखने का रस लेना चाहते हैं। पक्षियों, फूलों, पत्तों, कीट-पतंगों, चाँद-सितारों के सजीव चित्रों के साथ इस संकलन को बच्चे (और बड़े भी) खूब मज़े से पढ़ेंगे।

अक्कड़-बक्कड़ इस कड़ी की पहली किताब है। यह और **बैठ घोड़ा पानी पी** पीढ़ी-दर-पीढ़ी कई अनाम कवियों की पंक्तियों को जोड़-जोड़कर बनी कविताओं या गीतों के संकलन हैं। भारत के ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में इन जानदार गीतों की ध्वनियाँ खेलते हुए बच्चों की टोलियों के बीच आज भी सुनी जा सकती हैं। लेकिन कई कड़ियाँ और अन्तर्सम्बन्ध टूट जाने के कारण ये कविताएँ भी बड़ी कठिनाई से ही बच पाती होंगी। **अक्कड़-बक्कड़** उन विलुप्त होती कविताओं का एक ऐसा शुरुआती संकलन है जिसे शहर के बच्चे भी बहुत पसन्द कर रहे हैं – मानो उन्हें कहीं से कुछ याद आ रहा हो, कोई तार अचानक जुड़ गया हो।

हिन्दी के ऐसे कवियों की संख्या अधिक नहीं है जिन्होंने इन पारम्परिक गीतों जैसी खिलन्दड़ी और जीवन्त कविताएँ बच्चों के लिए लिखी हैं। **दूध-जलेबी जग्गग्गा, क्यों जी बेटा राम सहाय**, और **हाऊ हाऊ हप्प** में हमने छाँट-छाँटकर ऐसी कविताओं या कविता की पंक्तियों को संकलित किया है। **अक्कड़-बक्कड़** सहित अगर इन किताबों से बच्चे पढ़ने की शुरुआत करें, तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि उन्हें पढ़ना और लिखना अपने आप ही अच्छा लगने लगे। ठीक वैसे ही जैसे वे बोलना सीख जाते हैं। और ठीक वैसे ही जैसे वे स्कूल जाने से पहले ही अपने घर में बोली जा रही भाषा के पाँच हज़ार से भी ज़्यादा शब्द सीख जाते हैं। सीखने की इसी प्रक्रिया से वे पढ़ना भी सीख जाते हैं – बशर्ते पठन सामग्री में उनकी रुचि का संसार उन्हें मिले। इससे पढ़ना-लिखना सिखाना भी सहज और अर्थपूर्ण हो जाता है। जिन लोगों को पढ़ने या पढ़ाने का अच्छा-खासा अनुभव है वे बताते हैं कि इस रोमांचकारी घटना का अद्‌भुत आनन्द है कि एक दिन अचानक आपका बच्चा या छात्र आपको किसी पन्ने से अपने आप कुछ पढ़कर सुनाने लगता है!

पढ़ना सीखने की इस प्रक्रिया पर पिछले कई वर्षों से काफी सोच-विचार हुआ है। अगर आप इस सोच से गहराई से परिचित होना चाहते हैं तो अब तक खूब पढ़ी जा चुकी और बहुत उपयोगी सिद्ध हो चुकी पुस्तक **बच्चे की भाषा और अध्यापक** को ज़रूर पढ़ें। यह नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली से छपी है और इसके लेखक हैं कृष्ण कुमार।

- तेजी ग्रोवर

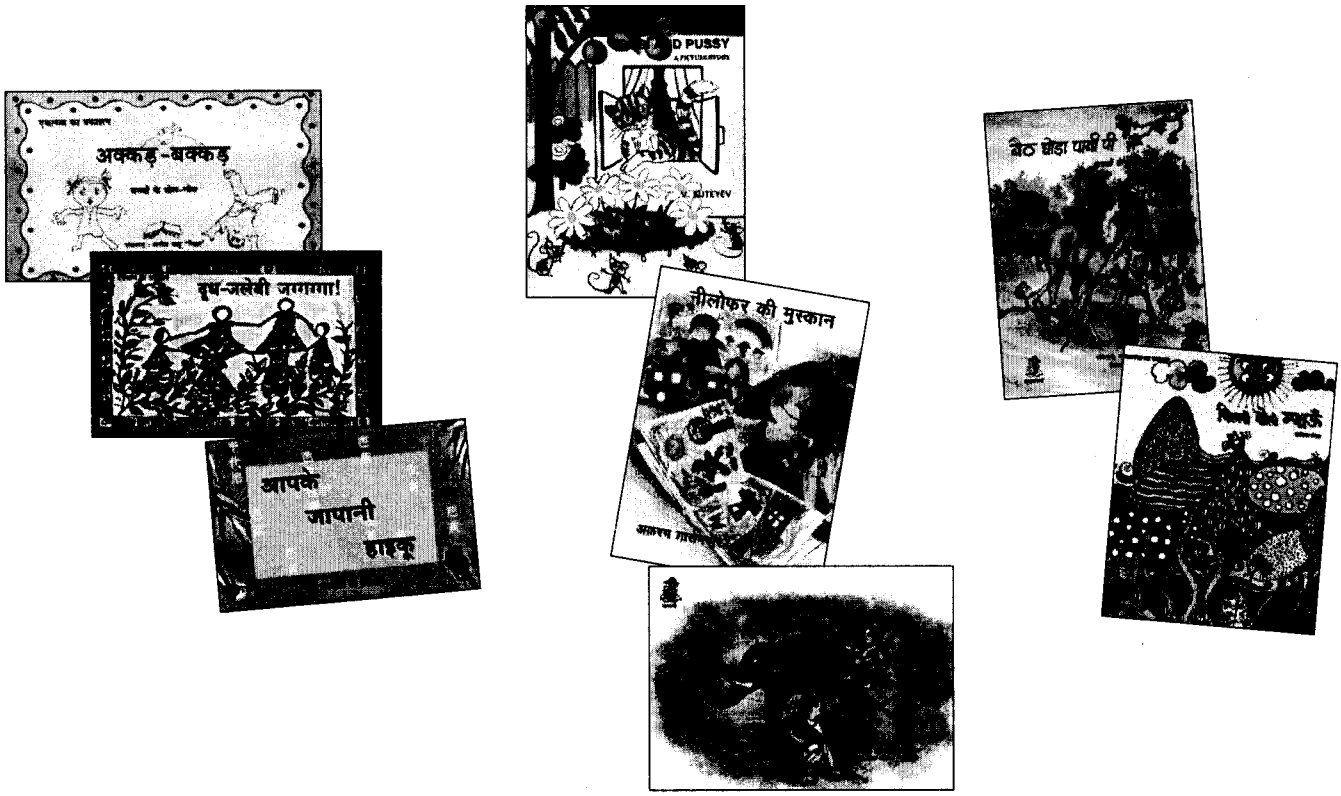

तीन से आठ साल तक के बच्चों के लिए एकलव्य द्वारा प्रकाशित कविताएँ, कहानियाँ, चित्रकथाएँ

चित्रकथाएँ

बिल्ली के बच्चे
नाव चली
रूसी-पूसी
भालू ने खेली फुटबॉल
नटखट गधा
नन्हे चूज़े की दोस्त
छुटकी उल्ली
तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?
मैंने एक लाइन बनाई
मैं भी (मराठी)
रूसी-पूसी (मराठी)
नाव चली (हिन्दी/बुन्देली/मालवी/बांग्ला)
चूहे को मिली पेंसिल (बुन्देली/मालवी/बांग्ला)

The Boat
Me Too
The Mouse and the Pencil
Rusi and Pussy
I made a Line

कविताएँ

अक्कड़ बक्कड़
बैठ घोड़ा पानी पी
दूध-जलेबी जग्गग्गा
बिल्ली बोले म्याऊँ
आपके जापानी हाइकू

कविता पोस्टर

11 कविता पोस्टरों का सेट
A set of 5 poetry posters

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, तो स्कूली शिक्षा भी सार्थक हो जाती है। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। एकलव्य ने शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन, इन्दौर और परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।

एकलव्य

ऊटपटाँग कविता भाषा से दोस्ती करने में एक अहम भूमिका निभाती है। बचपन की ये लय-ताल-बद्ध कविताएँ न केवल आसानी से याद हो जाती हैं बल्कि जीवन भर भूलती भी नहीं हैं। बच्चों और बड़ों को समान रूप से रोचक लगने वाली ये रचनाएँ ताउम्र जीवन को देखने के नित-नए ढंग सिखाती रहती हैं।

क्यों जी बेटा रामसहाय में आसानी से याद हो जाने वाली ऐसी पंक्तियाँ हैं जिनसे बच्चों को पढ़ने में मज़ा आएगा। शिक्षक भी पाठ्य-पुस्तकों का साथ देने वाली इस पुस्तक में ताज़गी महसूस करेंगे।

ISBN: 81-87171-86-3

मूल्य : 18.00 रुपए